# शिक्षा के प्रकार –

## औपचारिक या नियमित शिक्षा –

हैण्डरसन के शब्दों में, "जब बालक, व्यक्तियों के कार्यों को देखता है, उनका अनुकरण करता है और उनमें भाग लेता है, तब वह अनौपचारिक रूप से शिक्षित होता है। जब उसको सचेत करके और जानबूझकर पढ़ाया जाता है, तब वह औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त करता है। इसमें बालक को निश्चित व्यक्त द्वारा नियमित रूप से निश्चित समय पर निश्चित ज्ञान दिया जाता है।

आज औपचारिक शिक्षा की आलोचना भारत में ही वरन् विश्व के प्रत्येक देश में की जा रही है। भारत में औपचारिक शिक्षा ने शिक्षित बेरोजगारी की समस्या की विभीषिका को जन्म दिया है।

अन्त में जान डयूवी के शब्दों में कह सकते हैं –

औपचारिक शिक्षा बड़ी सरलता से तुच्छ, निर्जीव, अस्पष्ट तथा किताबी बन जाती है। कम विकसित समाजों में संचित ज्ञान होता है, उसे कारी से बदला जा सकता है। परन्तु उन्नत संस्कृति में जो बातें सीखी जाती है।

## अनौपचारिक या अनियमित शिक्षा-

हिन्दी संस्कृति के अनुसार यह शिक्षा बालक के जन्म से कुछ मास पहले ही प्रारम्भ हो जाती है। इसीलिये होने वाली माताओं से आशा की जाती है कि वे अपने खान-पान तथा आचरण को अच्छा बनाये। अभिमन्यु ने अपनी माता के गर्भ में ही चक्रव्यूह तोड़ना सीख लिया था।

अनौपचारिक शिक्षा को अनायास तथा आकस्मिक रूप में प्राप्त होती रहती है। यह जीवनपर्यन्त चलती रहती है।

## औपचारिकेतर शिक्षा –

'नान - फॉर्मल एज्युकेशन' हेतु निरौपचारिक शिक्षा न - अनौपचारिक शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा, गैर - औपचारिक शिक्षा औपचारिकेतर शिक्षा आदि हिन्दी के शब्दो का प्रयोग किया गया है।

औपचारिकेतर शिक्षा औपचारिक तथा अनौपचारिक का मिला - जुला रूप है जिसमे न हो औपचारिक शिक्षा की भाँति विभिन्न प्रकार के बन्धन होते है और न ही अनौपचारिक शिक्षा का खुलापन। इसमे बालक का समाजीकरण, अनुभवो की प्राप्ति उसके विभिन्न कौशलो का निर्माण बन्द कमरो या चहारदीवारी के भीतर न होकर खुले आकाश मे होता है।

## प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष शिक्षा –

### प्रत्यक्ष शिक्षा –

इस शिक्षा को 'वैयक्तिक शिक्षा भी कहा

जाता है। यह शिक्षा, अध्यापक और छात्र के बीच होती रहती है। अध्यापक अपने ज्ञान आदर्शों और उद्देश्यों के छात्र के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

(ii) अप्रत्यक्ष शिक्षा —

इस शिक्षा को वैयक्तिक शिक्षा भी कहा जाता है। यह शिक्षा अध्यापक और छात्र के बीच रहती है। जब छात्र पर अध्यापक के उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता है, तब वह विभिन्न प्रकार के अप्रत्यक्ष साधनों को अपनाकर छात्र व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। वह इस कार्य को दो प्रकार से कर सकता है -

1. वह समय - तत्परता और नियमबद्धता पर उपदेश दे सकता है।
2. वह अपने कार्यों में समय - तत्पर और नियमबद्ध हो सकता है।

## – वैयाक्तिक व सामूहिक शिक्षा –

### (i) वैयाक्तिक शिक्षा –

वैयाक्तिक शिक्षा का सम्बन्ध केवल एक बालक से होता है यह शिक्षा व्यक्तिगत रूप से और अकेले दी जाती है। शिक्षा देते समय उसकी रूचि, प्रकृति योग्यता और व्यक्तिगत विभिन्न का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। परिणामत: अनेक वैयाक्तिक शिक्षण विधियो की खोज की गयी है।

### सामूहिक शिक्षा –

सामूहिक शिक्षा का सम्बन्ध एक बालक से न होकर, बालको के समूह से होता है। इसी शिक्षा में बालको की व्यक्तिगत रूचियों, प्रवृत्तियों योग्यताओ और विभिन्नताओ की ओर ध्यान नही दिया जाता है। आजकल सभी देशो के सभी प्रकार के स्कूलों में शिक्षा का यही स्वरूप प्रचलित है।

# सामान्य व विशिष्ट शिक्षा –

## सामान्य शिक्षा –

इस शिक्षा को उदार शिक्षा भी कहते है। आजकल के भारतीय हाई और हायर सेकेण्डरी स्कूलो में इसी प्रकार की शिक्षा दी जाती है। इसका उद्देश्य केवल उनकी सामान्य बुद्धि को तीव्र करना है। यह उनको किसी विशेष व्यवसाय के लिए तैयार नहीं करती है।

## विशिष्ट शिक्षा –

यह शिक्षा किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर दी जाती है। इसका उद्देश्य बालको को किसी विशेष व्यवसाय या निश्चित कार्य के लिए तैयार करना होता है। इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद बालक, जीवन के एक विशेष या निश्चित क्षेत्र में कार्य करने के लिए कुशल समझा जाने लगता है।

## उदाहरण –

1. जीवन – पर्यन्त शिक्षा
2. सबके लिये शिक्षा
3. यौन शिक्षा
4. जनसंख्या शिक्षा
5. मूल्यपरक शिक्षा आदि।